REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2025

समकालीन बाल साहित्य में डॉ. सुरेन्द्र विक्रम के योगदान का अध्ययन

प्रभा त्रिपाठी
शोधार्थी हिन्दी
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ लता द्विवेदी
सेवानिवृत्त प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी
शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

किसी भी क्षेत्र का साहित्यकार स्वभावतः स्वतंत्र होता है, उसकी गुणवत्ता को किसी परिधि में नहीं बाँधा जा सकता। साहित्यकार अपनी सामर्थ्य भर पूर्ण मनोयोग से व्यक्ति, समाज और देश से लेकर संपूर्ण विश्व तक को नित नई दिशा देने का प्रयास करता है। बालसाहित्य के साथ साहित्यकार का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि बालसाहित्य ही यह चाक है, जिस पर बालक रूपी अनगढ़ मिट्टी को चढ़ाकर रचनाकर रूपी कुंभकार उसे सुदृढ़ आकार देकर समाज को सौंपता है। बालसाहित्यकारों ने अपने इस दायित्व को बखूबी निभाया है। डॉ. सुरेन्द्र विक्रम भी बालसाहित्य के एक ऐसे ही समर्थ रचनाकार हैं, जिन्होंने न केवल साहित्य के माध्यम से बालकों का मनोरंजन कर उन्हें नई राह दिखाई है अपितु बालसाहित्य की समीक्षा को अपने दिए गए प्रदेयों के कारण वे न केवल अपने समकालीन रचनाकारों में अपना एक अलग स्थान रखते हैं, बल्कि अपने पूर्ववर्ती साहित्यकारों के मध्य ससम्मान चर्चा का विषय तथा परवर्ती साहित्यकारों के लिए प्रेरणास्रोत बने हैं।

मुख्य शब्द – डॉ. सुरेंद्र विक्रम, बालसाहित्य, रचनाकार, मनोरंजन एवं समाज।

प्रस्तावना –

आज का बालसाहित्य अपने तमाम उतार–चढ़ाव के बाद अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है। बढ़ती साक्षरता और मीडिया ने जिस प्रकार बालकों की सोच समझ को पारंपरिक बालकों से अलग कर दिया है, बालसाहित्य पर उसका प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देता है। आज का बालसाहित्य साहित्य जगत में एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित हो चुका है। विगत शताब्दी के अंत तक बालसाहित्य ने अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए अपने लिए रास्ता बनाया है और उस पर डटकर चला है। नई सदी की चुनौतियाँ भी उसने स्वीकार कर ली हैं, लेकिन उसमें कहीं न कहीं ईमानदार प्रयास की कमी खटकने लगी है। अपने आपको बड़ा और श्रेष्ठ साबित करने के लिए कई रचनाकार हर रोज नई–नई पुस्तकें प्रकाशित कर प्रत्यक्ष रूप से बालसाहित्य को

समृद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं, परंतु परोक्ष रूप से वह बालकों के मनोविज्ञान, उनकी समझ, समस्यापूर्ति, रुचि एवं आवश्यकता को पूरा करने में कितना समर्थ हैं, इस पर शायद गंभीर चिंतन नहीं किया जाता। यहाँ यह कहने का तात्पर्य ऐसा बिल्कुल नहीं है कि बालसाहित्य में स्तरीय लेखन नहीं होता, लेकिन साहित्यकारों की व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा में बालकों और बालसाहित्य की हानि होगी, ऐसा उन्हें सदैव ध्यान रखना होगा।

बालसाहित्य लेखन के लिए जहाँ बाल मनोविज्ञान की अधुनातन पकड़ आवश्यक है, वहीं प्रत्येक विषय को बच्चों के उपयुक्त बनाकर प्रस्तुत करने का शिल्प भी आना चाहिए। आज भी अनेक बालसाहित्यकार परंपरागत लोककथाओं को उसी रूप में बच्चों के लिए उपयुक्त मानते हैं परंतु उन्हें यह ध्यान रखना होगा कि ऐसी कितनी कहानियाँ बालसाहित्य और बच्चों में स्वीकार्य होंगी? आज का बालक तार्किक हो गया है उसका मानस, बौद्धिक स्तर और परिवेश जितनी तेजी से बदल रहा है, बालसाहित्य लेखन के सामने उतनी ही गंभीर चुनौतियाँ खड़ी हैं।

आज का बालक अपने बचपन से कम और समसामायिक जीवन की समस्याओं से अधिक जुड़ गया है। इसलिए यह तय है कि लोककथाओं को भी उनकी इन नई समस्याओं के समाधान का रास्ता ढूँढना होगा। ऐसा न कर पाने की स्थिति में आज के दौर में निश्चित ही परंपरागत विषय और रचनाएँ किसी काम के नहीं रह जाएँगे। लेखकों के सामने यहाँ फिर एक चुनौती आती है–लोककथाएँ नहीं तो और क्या? बालकों को किस प्रकार हम आदर्श और नैतिकता की शिक्षा दे सकेंगे?

वस्तुतः बच्चों की सोच का दायरा आज इतना बढ़ गया है कि वे परिवार, समाज या देश की घटनाओं से ही प्रभावित नहीं होते, वरन् कभी–कभी विश्व की समस्याएँ भी उन्हें विचलित करने लगी हैं। 'हैरी पॉटर' इसका जीता जागता उदाहरण है। ऐसे में बालसाहित्यकार का यह दायित्व बन जाता है कि वह बालकों के कोमल मन–मस्तिष्क में शांति, प्यार और भाई–चारे का बीजारोपण करे। बच्चों की इसी सोच के कारण आज के बालसाहित्यकार से यह अपेक्षा की जाने लगी है कि वह कुत्ता, बिल्ली, भालू, बंदर, शेर तथा लोककथाओं व परीकथाओं के मोह से बाहर निकलकर बच्चों को कुछ नया दे। इसमें कोई दो राय नहीं है कि आज बच्चों में नई वैश्विक सोच जाग्रत करके ही आज का सार्थक बालसाहित्य लिखा जा सकता है।

आज का बाल–साहित्यकार, निःसंदेह, ऐसा ही सार्थक बालसाहित्य लिखने की ओर अग्रसर है। आज का बालसाहित्य बच्चों के समसामयिक प्रश्नों के उत्तर देने के लिए प्रयासरत है। समसामयिक घटनाओं, परिवेश और भविष्य की दुनिया को देखते हुए आज इन विषयों पर लेखन की आवश्यकता है।

विश्लेषण –

डॉ. सुरेंद्र विक्रम विगत तीस वर्षों से बालसाहित्य के क्षेत्र में ऐसी ही समस्याओं एवं चुनौतियों को स्वीकार करते आ रहे हैं। बालमनोविज्ञान का पारखी होने के कारण उन्हें इस क्षेत्र में आशातीत सफलता भी प्राप्त हुई है। बालसाहित्य के विषय में अपने स्वतंत्र चिंतन और कठिन परिश्रम के कारण उन्होंने बाल–साहित्य–विषयक अपनी स्वतंत्र अवधारणाएँ निर्मित की हैं, जो उन्हें अपने समकालीनों में श्रेष्ठ और अलग बनाती हैं।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. श्रीप्रसाद की दृष्टि में डॉ. विक्रम की काव्य–सर्जना आधुनिकताबोध से समन्वित होने के कारण ही वे अपने समकालीन बालसाहित्यकारों में विशिष्ट पहचान लेकर उभरे हैं। उनके अनुसार – ''डॉ. सुरेन्द्र विक्रम को हम समकालीन बालसाहित्यकारों में इस रूप में अलग कर सकते हैं कि वे पारंपरिक कथ्यों से अलग अपनी मौलिकता से आधुनिक संदर्भों से जुड़ी सार्थक रचनाएँ बच्चों के लिए लिखते हैं विशेषतः कविताएँ। ताकि बच्चे उन्हें उसी रूप में ग्रहण कर सकें जिस रूप में वे लिखी गई हैं और जिन्हें बच्चे प्रायः पसंद करते हैं।''[1]

डॉ. विक्रम के काव्य में अधुनातन बालक का मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है। आधुनिक और वैज्ञानिक दृष्टि होने के बाद भी उनके बालसाहित्य में स्वर्णिम इतिहास, संस्कृति और परंपरा को बालक के जीवनमूल्यों से जोड़कर रखा गया है। उनकी कविताओं का बालक प्रत्येक क्षण ग्रहणशील, संवेदनशील तथा कार्यशक्ति से भरपूर दिखता है। उसकी मासूमियत और अनगिनत इच्छाएँ सामने खड़ी हो जाती हैं, इसीलिए कविताओं से

बचपन दूर नहीं जाने पाता। उनका काव्य–साहित्य इक्कीसवीं शताब्दी का मुकाबला करने वाले बच्चों के लिए अँधेरे में रोशनी बिखेर देने जैसा चुनौती भरा काम करता है।

डॉ. विक्रम का काव्य साहित्य कोरी कल्पना के बजाए यथार्थ की भूमि पर टिका है। वे बच्चों को अनावश्यक कल्पना की उड़ान भरने की छूट नहीं देते वरन् वे उसे वास्तविक स्थिति से अवगत कराते हैं, क्योंकि उन्हें पता है कि आज का बच्चा जब तक जीवन के यथार्थ से परिचित नहीं होता, तब तक वह अपने आने वाली जिंदगी के लिए स्वयं को तैयार नहीं कर पाएगा। लेकिन इस पर भी वे बालकों को निर्मम यथार्थ से दूर रखते हैं। अतः कहा जा सकता है कि डॉ. विक्रम और उनका बालसाहित्य आज की अपेक्षाओं पर खरा उतरा है। वह भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए बच्चों को सक्षम और समर्थ बनाता है। डॉ. विक्रम ने अधिकांश ऐसी रचनाएँ लिखीं, जो मनोरंजक होने के साथ ही अपने उद्देश्य में सफल भी हैं। डॉ. विक्रम के समकालीन रचनाकार खुले मन से उनकी प्रशंसा करते हैं।

बाल–कहानियों के क्षेत्र में भी उनकी स्थिति यही है। इन सबसे इतर अपने समकालीन बालसाहित्य के रचनाकारों में उन्हें जो एक अलग स्थान प्राप्त है उसका श्रेय बालसाहित्य में समीक्षा के क्षेत्र में दिए गए उनके अवदान को जाता है। इसके लिए स्वयं उनके समकालीनों ने बिना किसी हिचक के उन्हें अपने से श्रेष्ठ माना है।

बच्चों की मासिक पत्रिका 'देवपुत्र' के संपादक कृष्ण कुमार अष्ठाना ने इस संबंध में अपनी स्वीकारोक्ति देते हुए कहा है कि – ''डॉ. सुरेंद्र विक्रम की सबसे बड़ी विशेषता, जो उन्हें समकालीन साहित्यकारों से अलग श्रेणी में स्थापित करती है, वह यह है कि सुरेन्द्र विक्रम का विक्रम अन्य साहित्यकारों के साहित्य के समालोचना में अधिक प्रकट हुआ है। वे साहित्य मर्मज्ञ हैं, अध्येता हैं, एक समग्र शोधदृष्टि है उनके पास और इस कार्य के प्रति अटल निष्ठा, अटूट श्रद्धा, संपूर्ण समर्पण ही शायद उनमें छुपे सर्जक को कुछ अपना करने के लिए अवकाश नहीं देता।''[2]

वरिष्ठ बालसाहित्यकार सुंदरलाल 'अरुणेश' भी उन्हें समकालीनों से अलग मानने के लिए उनके इस समीक्षक स्वरूप को ही विशेष मानते हैं। डॉ. गणेशदत्त सारस्वत का मत है कि – ''समकालीन अधिकांश साहित्यकारों ने बाल–साहित्य–कथा, कविता, एकांकी आदि का सृजन तो किया है किंतु शोध और समीक्षा के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियाँ शून्य हैं। जबकि डॉ. विक्रम इसके अपवाद हैं। वे अपनी बाल–रचनाओं के लिए तो सुविख्यात हैं ही, बालसाहित्य के शोधकर्ता तथा श्रेष्ठ समीक्षक के रूप में और भी चर्चित हैं।''[3]

वरिष्ठ बालसाहित्यकार राजनारायण चौधरी भी डॉ. विक्रम के समीक्षा और शोध के कार्य को ही उन्हें समकालीनों में श्रेष्ठ मानने का आधार मानते हैं। उनके अनुसार – ''बालसाहित्य की समीक्षा बच्चों का खेल न होकर एक जोखिम भरा कार्य है। ऐसे कार्यों में विरले ही हाथ डालने का साहस कर पाते हैं। उनमें से भी कुछ एक लोग ही होते हैं जिन्हें सफलता वरण करती है। इन्हीं विरले लोगों में हैं डॉ. सुरेंद्र विक्रम।''[4]

निश्चय ही शोधकार्य चुनौती भरा कार्य है, जो अधिकांश बालसाहित्यकारों के वश का नहीं है। लीक से हटकर चलना हर एक के वश की बात नहीं होती। इसके लिए दृढ़ संकल्प, इच्छाशक्ति और कुछ नया कर गुजरने की अदम्य आकांक्षा आवश्यक होती है। डॉ. विक्रम की यही विशेषताएँ उन्हें अपने समकालीनों की पंक्ति से अलग एक श्रेष्ठ स्थान देती है। इस संबंध में चौधरी जी का यह वक्तव्य उल्लेखनीय है – ''समकालीन साहित्यकारों से वे इस दृष्टि से भिन्न हैं कि वे परंपरा या लीक से हटकर कुछ नया लिखने पर विशेष जोर देते हैं। इसलिए आलोचनात्मक निबंधों में भी वे नवीनता बनाए रखते हैं।''[5] उक्त वक्तव्य यह भी दर्शाता है कि डॉ. विक्रम का बालसाहित्य अपनी नवीनता के कारण भी अपनी एक अलग पहचान रखता है।

कोई भी रचनाकार अपनी रचना को तभी जीवंत बना सकता है, जब वह अपनी अनुभूति के बल पर रचना में लाए गए पात्रों के मन का कोना कोना झाँकने में समर्थ हो पाता है। बालसाहित्य के संबंध में भी यह बात पूर्णतया सत्य है। डॉ. विक्रम इस सत्य से भली–भाँति परिचित हैं और इसी सत्य ने उन्हें उत्कृष्ट कोटि का बाल–रचनाकार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे वे अपने समकालीन बाल–रचनाकारों में अपनी एक अलग पहचान रखते हैं। डॉ. विक्रम स्वाभाविकता के प्रति विशेष आग्रह रखते हैं। रवींद्र कुमार 'राजेश' के विचार

से ''वे बालसाहित्य की रचना करते समय स्वयं बचपन में पहुँच जाते हैं और बालकों के क्रियाकलापों का सूक्ष्म अध्ययन कर उनका चित्रण करते हैं। स्वाभाविकता उनके लेखन की विशेषता है।''[6]

वस्तुतः विभिन्न विधाओं में लेखनी चलाने वाले डॉ. विक्रम अपनी समीक्षा और शोधदृष्टि के कारण ही अपने समकालीन साहित्यकारों में ही नहीं वरन् संपूर्ण बालसाहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

डॉ. सुरेन्द्र विक्रम का समकालीन बाल साहित्य में योगदान अक्षुण्य है। वे बाल साहित्य के ऐसे ऊर्जावान सर्जक, समीक्षक और चिंतक हैं जिन्होंने अपनी समर्थ लेखनी से बाल साहित्य को समृद्ध बनाया है। वे एक कुशल संपादक के साथ बाल साहित्य के प्रमुख समीक्षक माने जाते हैं।

डॉ. विक्रम की उपलब्धियों पर हर्ष अनुभव करते हुए डॉ. श्रीप्रसाद लिखते हैं – "डॉ. विक्रम ने जहाँ बालोपयोगी, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, रोचक और मनोरंजक कविताएँ लिखी हैं, वहीं सीख–भरी कहानियाँ भी। समकालीन बालसाहित्यकारों में वे अपनी आधुनिक सोच तथा शोधदृसमीक्षा कार्य के कारण विशिष्ट पहचान रखते हैं।"[7]

समय–समय पर डॉ. विक्रम के कृतित्व पर लिखने वाले डॉ. कौशलेंद्र पाण्डेय का मत है – "डॉ. सुरेंद्र विक्रम लेखन की विभिन्न विधाओं के बालरचनाकार हैं। वे बालसाहित्य–समालोचक तथा बालपत्रकारिता के प्रथम पुरुष के रूप में स्थापित हो चुके हैं।"[8]

वरिष्ठ रचनाकार अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' का कथन है – "डॉ. विक्रम उन चुनिंदा रचनाकारों में हैं जिनका व्यक्तित्व और कृतित्व सभी मानवीय गुणों से समृद्ध है। समीक्षा के क्षेत्र में उनकी पुस्तकें मील का पत्थर हैं।"[9]

सुपरिचित बालसाहित्यकार डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' लिखते हैं – "बालकाव्य में आधुनिकताबोध और शिल्पगत प्रयोगों के कारण डॉ. विक्रम समकालीन बालसाहित्यकारों की भीड़ में अपनी अलग पहचान रखते हैं। वे प्रखर समीक्षक, कुशल अध्यापक, वक्ता, भाषाविद् तथा समर्पित रचनाकार हैं।"[10]

प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. प्रकाश मनु कहते हैं – "डॉ. सुरेंद्र विक्रम आजकल काफी लिख रहे हैं और पूरे जोश के साथ। मैंने युवा पीढ़ी के किसी लेखक को उनके जैसी मेहनत करते नहीं देखा। बालसाहित्य की प्रतिष्ठा के लिए जूझने वालों में मैं उन्हें प्रथम स्थान पर रखता हूँ।"[11]

डॉ. विपिन कुमार गिरि लिखते हैं – "डॉ. विक्रम के बहुआयामी व्यक्तित्व और कृतित्व के मूल्यांकन की आवश्यकता है। उनकी मौलिक तथा समीक्षात्मक कृतियाँ उन्हें समकालीन बालसाहित्यकारों से अलग करती हैं। उनके समीक्षा–ग्रंथ उन्हें एक श्रमसाध्य और सफल समीक्षक सिद्ध करते हैं।"[12]

डॉ. प्रणव शास्त्री का मत है – "डॉ. सुरेंद्र विक्रम केवल बालरचनाकार ही नहीं बल्कि बालसाहित्य के इतिहासकार के रूप में भी याद किए जाएँगे। उनके आलोचनात्मक ग्रंथ भविष्य के शोधार्थियों के लिए मील का पत्थर सिद्ध होंगे।"[13]

डॉ. प्रतीक मिश्र लिखते हैं – "डॉ. सुरेंद्र विक्रम वैज्ञानिक सोच के बालसाहित्यकार हैं। वे बालहित तथा विश्व–स्तरीय नवीनतम गतिविधियों से सदैव परिचित रहते हैं, जिसका प्रभाव उनके साहित्य में परिलक्षित होता है। एक समीक्षक के रूप में उनकी कृतियाँ हिंदी बालसाहित्य में उनकी विशिष्ट पहचान निर्मित करती हैं।"[14]

उपर्युक्त विद्वानों के अतिरिक्त डॉ. परशुराम शुक्ल, राजेंद्र वर्मा, सूर्य कुमार पाण्डेय, विनायक, राजनारायण चौधरी, सुशील सरित, डॉ. अशोक, डॉ. शरणबिहारी गोस्वामी, श्रीमती शकुंतला सिरोठिया, कमलेश भट्ट 'कमल' आदि ने भी समकालीन बालसाहित्य में डॉ. विक्रम के अवदान को रेखांकित किया है।

प्रायः सभी बालसाहित्यकारों ने डॉ. विक्रम द्वारा समकालीन हिंदी बालसाहित्य के संवर्धन में किए गए प्रयासों की सराहना की है। उन्हें आधुनिक सोच और वैज्ञानिक दृष्टि का रचनाकार माना है। उन्हें इतिहास, परंपरा और संस्कृति का वाहक माना है जो बालकों में जीवन मूल्य भरने का प्रयास करता है। वह बालकों को आधारहीन कल्पना में उड़ाने के बजाय यथार्थ के धरातल पर चलने–दौड़ने के लिए तैयार करता है। अपनी अनुभूति से बालमन का कोना–कोना झाँक आता है, जिससे वो रचना को जीवंत बना सके।

विभिन्न विधाओं को अपने रचना संसार का हिस्सा बनाने वाले डॉ. विक्रम के संदर्भ में समीक्षा साहित्य को लेकर लगभग सभी विद्वान एकमत दिखते हैं। समीक्षा साहित्य के संवर्धन में उनके द्वारा जो प्रयास किए गए

सभी बालसाहित्यकारों ने खुले हृदय से उसकी प्रशंसा की। उनकी समीक्षा संबंधी रचनाओं को मील का पत्थर तक कह दिया है। उनके समीक्षा साहित्य ने उनकी अन्य विधाओं की चमक फीकी कर दी। लेकिन यह किसी चमत्कार का परिणाम नहीं है। आपने बालसाहित्य की उपेक्षित पड़ी इस विधा पर तब लेखनी चलाई जब लोग इसे बालसाहित्य का हिस्सा मानने को भी तैयार नहीं थे। समीक्षा की चारों कृतियों पर किया गया श्रम स्पष्ट दिखता है। सबसे बड़ी बात यह कि आलोचना के अभाव में दोयम दर्जे का दंश झेल रहे बालसाहित्य के लिए आपकी समीक्षा संबंधी कृतियाँ संजीवनी बन कर आती रहीं। यही कारण है कि बालसाहित्य से जुड़े सभी रचनाकार आज एक स्वर में आपके इस श्रम की प्रशंसा करते दिख रहे हैं। इन कृतियों ने सर्वसम्मति से आपको समकालीन हिंदी बालसाहित्य में विशिष्ट और अद्वितीय बना दिया है।

डॉ. सुरेंद्र विक्रम समकालीन हिंदी बालसाहित्य ही नहीं वरन संपूर्ण हिंदी बालसाहित्य के आकाश में सूर्य की भाँति प्रकाशमान है। समीक्षा के अभाव में जब बालसाहित्य कही अंधकार में पड़ा हुआ था। बड़े–बड़े समीक्षकों की पैनी दृष्टि भी उसे खोज नहीं पा रही थी, डॉ. विक्रम ने आकर अपने समीक्षा ग्रंथ के प्रकाश से प्रकाशित कर बालसाहित्य के वास्तविक स्वरूप के दर्शन कराये और साहित्य में उसके महत्व की स्थापना की। आपके इस प्रयास को बालसाहित्यकारों द्वारा निर्विवाद रूप से स्वीकार कर आपको समकालीन हिंदी बालसाहित्य में विशिष्ट स्थान दिया गया।

डॉ. सुरेन्द्र विक्रम समकालीन हिन्दी बाल साहित्य के क्षेत्र में एक समर्थ साहित्यकार के रूप में ख्यातिलब्ध है। उन्होंने अपने लेखनी से हिन्दी बाल साहित्य को विशिष्ट और अप्रतिम बना दिया है। वे एक सफल वैज्ञानिक सोच सम्पन्न बाल साहित्यकार हैं। इस प्रकार समकालीन बाल साहित्य विशेषांकों के अध्ययन से यह तथ्य स्पष्ट रूप से प्रतिपादित होता है कि वर्तमान समय में हिन्दी बाल साहित्य ने अपनी विषय–वस्तु, अभिव्यक्ति और उद्देश्य – तीनों ही स्तरों पर उल्लेखनीय प्रगति की है। इन विशेषांकों ने बाल साहित्य के विकास की न केवल एक ऐतिहासिक झलक प्रस्तुत की है, बल्कि उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और नैतिक पक्षों को भी गहराई से उजागर किया है। इन विशेषांकों में संकलित रचनाएँ यह प्रमाणित करती हैं कि बाल साहित्य अब एक सशक्त, युगानुकूल और मूल्यपरक विधा के रूप में स्थापित हो चुका है। समकालीन बाल साहित्य विशेषांकों की प्रमुख उपलब्धि यह है कि इन्होंने बाल साहित्य की विविध धाराओं – जैसे विज्ञानपरक दृष्टि, पर्यावरणीय चेतना, सामाजिक समरसता, बाल अधिकार, सांस्कृतिक विरासत और नैतिक मूल्यों को एक साझा मंच पर अभिव्यक्त किया है। इस प्रकार इन विशेषांकों ने न केवल रचनात्मक प्रयोगों को बढ़ावा दिया है, बल्कि बाल साहित्य के अध्ययन और मूल्यांकन के लिए नए दृष्टिकोण भी प्रदान किए हैं। इन विशेषांकों से यह भी स्पष्ट होता है कि समकालीन बाल साहित्य केवल बालक के मनोरंजन या शिक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उसके विचार, भावनाओं और सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास का माध्यम भी बन गया है। इन अंकों में संकलित रचनाएँ बालक के भीतर संवेदनशीलता, जिज्ञासा, कल्पनाशक्ति और जीवनमूल्यों के प्रति आस्था का विकास करती हैं। इस प्रकार समकालीन बाल साहित्य विशेषांक केवल साहित्यिक प्रस्तुति नहीं, बल्कि बाल साहित्य की दिशा और दृष्टि के सशक्त दस्तावेज हैं। ये विशेषांक बाल साहित्य के विकासक्रम, रचनात्मक प्रयोगशीलता और सामाजिक प्रयोजनशीलता के द्योतक हैं। शोधपरक दृष्टि से इनका महत्त्व इस बात में निहित है कि ये न केवल समकालीन बाल साहित्य की प्रवृत्तियों को परिभाषित करते हैं, बल्कि भावी साहित्यिक परंपरा के लिए मार्गदर्शक के रूप में भी कार्य करते हैं।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः समकालीन हिंदी बाल साहित्य में डॉ. सुरेन्द्र विक्रम का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण, बहुआयामी और दिशानिर्देशक है। उन्होंने बाल साहित्य को केवल मनोरंजन या ज्ञानार्जन का माध्यम न मानकर उसे समाज निर्माण और बाल व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का सशक्त साधन बनाया। उनके लेखन में बालक के अंतर्मन की संवेदनाएँ, उसकी जिज्ञासाएँ, कल्पनाशक्ति, खेलभावना, और जीवन–दृष्टि का यथार्थपूर्ण और सजीव चित्रण मिलता है। उन्होंने बालक को भविष्य के नागरिक के रूप में देखा, जो नैतिक, बौद्धिक और मानवीय दृष्टि से परिपक्व हो सके। डॉ. सुरेन्द्र विक्रम का योगदान इस दृष्टि से विशिष्ट है कि उन्होंने बाल साहित्य को आधुनिक

परिवेश, बदलते सामाजिक मूल्यों और तकनीकी युग की चुनौतियों के अनुरूप नई दिशा प्रदान की। उनके साहित्य में लोक संस्कृति, पर्यावरण चेतना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, राष्ट्रप्रेम और मानवीय मूल्यबोध का समन्वय देखने को मिलता है। उन्होंने परंपरागत बाल साहित्य की सीमाओं को तोड़ते हुए उसे समकालीन युगबोध और सामाजिक सरोकारों से जोड़ा। उनका रचनात्मक अवदान कविता, कहानी, गीत, नाटक और निबंध जैसी विविध विधाओं में समान रूप से सशक्त रूप में परिलक्षित होता है। उनके बाल गीतों में जहाँ लय, सौंदर्य और नैतिक शिक्षा का सामंजस्य है, वहीं उनकी कहानियों और गद्य रचनाओं में बाल मनोविज्ञान की गहराई और यथार्थ जीवन की झलक दिखाई देती है। उन्होंने यह प्रमाणित किया कि बाल साहित्य का उद्देश्य केवल बालक का मनोरंजन नहीं, बल्कि उसके व्यक्तित्व, संवेदनशीलता और चिंतनशीलता का विकास करना है। डॉ. सुरेन्द्र विक्रम का साहित्य समकालीन बाल साहित्य की सृजन–धारा को नई चेतना और दिशा प्रदान करता है। उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति की जड़ें तो हैं ही, साथ ही आधुनिक युग की चुनौतियों को स्वीकार करने का साहस भी है। उन्होंने बालक को आधुनिक युग का संवेदनशील, विवेकशील और उत्तरदायी नागरिक बनाने की दृष्टि से साहित्य को एक सामाजिक दायित्व के रूप में देखा। इस प्रकार डॉ. सुरेन्द्र विक्रम का समकालीन बाल साहित्य में योगदान न केवल सृजनात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि विचारात्मक, सामाजिक और शैक्षणिक दृ ष्टि से भी प्रेरणादायी है। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से बाल साहित्य को नयी विषयवस्तु, नवीन संवेदना और आधुनिक चेतना से समृद्ध किया। उनका योगदान हिंदी बाल साहित्य के विकास में एक स्थायी मील का पत्थर सिद्ध होता है, जो भविष्य की साहित्यिक और शैक्षणिक पीढ़ियों के लिए प्रेरणा–स्रोत बना रहेगा।

संदर्भ –

[1] विक्रम, डॉ. सुरेन्द्र से लिए गए साक्षात्कार पर आधारित
[2] विक्रम, डॉ. सुरेन्द्र से लिए गए साक्षात्कार पर आधारित
[3] विक्रम, डॉ. सुरेन्द्र से लिए गए साक्षात्कार पर आधारित
[4] विक्रम, डॉ. सुरेन्द्र से लिए गए साक्षात्कार पर आधारित
[5] विक्रम, डॉ. सुरेन्द्र से लिए गए साक्षात्कार पर आधारित
[6] विक्रम, डॉ. सुरेन्द्र से लिए गए साक्षात्कार पर आधारित
7 श्रीप्रसाद – डॉ. समकालीन बालसाहित्य और उसके मूल्य, पृष्ठ 112
8 पाण्डेय, कौशलेंद्र – हिंदी बालसाहित्य की प्रवृत्तियाँ, पृष्ठ 89
9 श्रीवास्तव, अखिलेश 'चमन' – बालसाहित्य : दृष्टि और दिशा, पृष्ठ 76
10 पाण्डेय, नागेश 'संजय' – आधुनिक बालकाव्य के आयाम, पृष्ठ 143
11 मनु, डॉ. प्रकाश – "बालसाहित्य का भविष्य और नवोदित रचनाकार", बालसाहित्य समीक्षा, खंड 12, अंक 3, 2021, पृष्ठ 54
12 गिरि, डॉ. विपिन कुमार – बालसाहित्य का आलोचनात्मक मूल्यांकन, पृष्ठ 101
13 शास्त्री, डॉ. प्रणव – हिंदी बालसाहित्य का इतिहास, पृष्ठ 167
14 मिश्र, डॉ. प्रतीक – बालसाहित्य : परंपरा और प्रयोग, पृष्ठ 59